Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 1, January-2022, ISSN 2230-7540

शिक्षक शिक्षा में स्थानीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के जागरूकता स्तर का अध्ययन

Ritu Chauhan[1]*, Dr. Bharat Ranjan[2]

[1] Research Scholar, The Glocal University Saharanpur, UP

[2] Research Supervisor, The Glocal University Saharanpur, UP

सार - ***इस शोध का उद्देश्य पुरुष और महिला और ग्रामीण और शहरी शिक्षित शिक्षकों में आईसीटी साक्षरता में अंतर की जांच और मूल्यांकन करना था। राजस्थान के तीन जिलों में तीस माध्यमिक विद्यालयों (5 शहरी और 5 ग्रामीण) में कस्टम-मेड प्रश्नावली का उपयोग करके मतदान किया गया था। प्रत्येक विद्यालय में दस माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षक थे जो अपने छात्रों को सर्वेक्षण प्रदान करते थे, और सर्वेक्षण प्रत्येक शिक्षक को व्यक्तिगत रूप से दिया जाता था। परिणामस्वरूप, 300 प्रशिक्षित शिक्षकों ने सर्वेक्षण भरा, जिसमें 50 के अधिकतम संभव स्कोर के साथ 50 प्रश्न शामिल थे। प्रश्नावली के परिणाम पांच श्रेणियों में विभाजित किए गए थे: अत्यंत खराब (1-10), खराब (11-20), औसत (21-30), अच्छा (31-40), और उत्कृष्ट (41-50)। टी-टेस्ट, ची-स्क्वायर, फ़्रीक्वेंसी, प्रतिशत, माध्य और मानक विचलन (एसडी) का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया था। पुरुष और महिला शिक्षित शिक्षकों के बीच आईसीटी जागरूकता में कोई सांख्यिकीय महत्वपूर्ण अंतर नहीं था, और शहरी और ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर था।***

कीवर्ड - ***शिक्षक शिक्षा, स्थानीय प्रशिक्षण, कार्यक्रम, जागरूकता स्तर***

----------X----------

1. परिचय

एन.सी.एफ. 2005 में प्रो. यशपाल जी ने अनुशंसा की थी कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हो जिसमें गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा केन्द्र में रखी जाये, इसी से प्रेरित होकर भारतीय ससंद ने अनिवार्य एवं निः शुल्क शिक्षा का अधिकार-2009 पारित किया। तदुपरान्त विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए यह आवश्यकता अनुभव हुई कि शिक्षक शिक्षा में भी गुणवत्ता हो, तभी प्रशिक्षित शिक्षक बालकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में समर्थ हो पायेगा। इसीलिए शिक्षक शिक्षा की पाठ्यचर्या में आमूलचूल परिवर्तन कर द्विवर्षीय पाठ्यक्रम का सृजन किया गया।[1-2]

शिक्षक शिक्षा में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को लागू करने का मुख्य कारण यह रहा कि विभिन्न अनुसंधानों के निष्कर्षो एवं दृष्टिकोणों के द्वारा यह सामने आया और एन.सी.टी.ई. ने यह अनुभव किया कि शिक्षक शिक्षा के एक वर्षीय प्रशिक्षण के द्वारा प्रशिक्षित शिक्षकों में शिक्षण के जिन गुणो एवं शिक्षण बारीकियों का समावेश होना चाहिए वह वास्तविक रूप में नहीं रहा है। एक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक का निर्माण करने में कहीं न कहीं एक वर्षीय पाठ्यक्रम की समयावधि पर्याप्त नहीं है। शिक्षक देश का भविष्य निर्माता होता है उसके कंधों पर देश के सृजनकर्ता देश के भविष्य (बालकों) के सम्पूर्ण विकास की जिम्मेदारी होती है। इसके लिए स्वंय शिक्षक में अथाह ज्ञान एवं सृजनकर्ता के गुणों का होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः इन सभी बातों को ध्यान में रखकर यह निश्चित किया गया कि शिक्षक शिक्षा में एक वर्षीय पाठ्यक्रम के स्थान पर द्विवर्षीय पाठ्यक्रम लागू किया जाये।[3]

शिक्षक शिक्षा के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम को शामिल किया गया । जिसमें कुल 400 कार्य दिवसों की व्यवस्था रखी गयी जिसमें 20 सप्ताह (20x6 = 120 दिन) स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिये रखे गये स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षणार्थियो को कक्षा में सीखे गए सिद्धान्तों को व्यवहार में लागू करने का अवसर मिलता है। व्यवसाय की राह में पहले चरण के रूप में

www.ignited.in

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित करने में भी उन्हें काफी मदद मिलती हैं।[4]

1.1 बी.एड. का अवलोकन कार्यक्रम और शिक्षक तैयारी में इसकी भूमिका

बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड.) कार्यक्रम शिक्षण में करियर के लिए व्यक्तियों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक अंडरग्रेजुएट डिग्री प्रोग्राम है जो इच्छुक शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दक्षताओं से लैस करता है। पलंग। कार्यक्रम शिक्षक की तैयारी में एक मूलभूत कदम के रूप में कार्य करता है, शैक्षिक सिद्धांतों, शिक्षाशास्त्र, पाठ्यक्रम विकास और कक्षा प्रबंधन की व्यापक समझ प्रदान करता है। यह सिंहावलोकन प्रमुख घटकों और बी.एड. के महत्व पर प्रकाश डालेगा।[5]

कार्यक्रम शोध, क्षेत्र के अनुभव और शिक्षण अभ्यास के संयोजन के माध्यम से सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल दोनों को विकसित करने पर केंद्रित है। यह विषय विशेषज्ञता प्रदान करता है, जिससे छात्रों को प्रारंभिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, विशेष शिक्षा, या विषय-विशिष्ट शिक्षण जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त होती है। इन विषय विशेषज्ञताओं में जाने से, भविष्य के शिक्षक अपने चुने हुए क्षेत्र में गहन ज्ञान और विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं, उन्हें अपने छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार करते हैं।[6]

1.2 शिक्षण प्रथाओं पर जागरूकता के स्तर का प्रभाव

विभिन्न शैक्षिक पहलों, कार्यक्रमों और शिक्षण पद्धतियों के बारे में शिक्षकों के जागरूकता स्तर का उनके शिक्षण अभ्यासों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जब शिक्षकों के पास नवीन शैक्षणिक दृष्टिकोणों, अनुसंधान-आधारित रणनीतियों और प्रभावी शिक्षण विधियों की उच्च स्तर की जागरूकता और समझ होती है, तो वे कक्षा में इन प्रथाओं को नियोजित करने की अधिक संभावना रखते हैं। यह, बदले में, छात्र सीखने के परिणामों और समग्र शैक्षिक प्रभावशीलता को बहुत प्रभावित कर सकता है। शिक्षकों के बीच जागरूकता का स्तर पेशेवर विकास के अवसरों, प्रासंगिक संसाधनों तक पहुंच, प्रभावी संचार चैनलों और शैक्षिक संस्थानों और नीति निर्माताओं से समर्थन जैसे कारकों से प्रभावित हो सकता है। शिक्षक जो अपने क्षेत्र में नवीनतम प्रगति, सर्वोत्तम प्रथाओं और साक्ष्य-आधारित निर्देशात्मक तकनीकों से अवगत हैं, वे अपने छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने और आकर्षक और प्रभावी शिक्षण अनुभव बनाने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं।[7]

सीमित जागरूकता वाले शिक्षक पारंपरिक, पुरानी शिक्षण विधियों पर भरोसा कर सकते हैं या उन वैकल्पिक तरीकों से अनभिज्ञ हो सकते हैं जो छात्रों के सीखने में बेहतर समर्थन कर सकते हैं। जागरूकता की इस कमी के परिणामस्वरूप नवीन रणनीतियों को शामिल करने, बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुकूल होने और विविध छात्र क्षमताओं और सीखने की शैलियों को पूरा करने के लिए अलग-अलग निर्देश प्रदान करने के अवसर चूक सकते हैं। शिक्षण प्रथाओं पर जागरूकता के स्तर का प्रभाव निर्देशात्मक तरीकों से परे है।[8]

2. साहित्य की समीक्षा

कंथाराज, एच.एम. (2018) भविष्य के शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों में किन विषयों को शामिल किया जाना चाहिए, इस पर इनपुट प्रदान करने के लिए फ़िनलैंड में शिक्षण विशेषज्ञों का सर्वेक्षण किया गया। अध्ययन का व्यापक उद्देश्य दुनिया भर के छात्रों को बेहतर सेवा देने के लिए शिक्षकों की तैयारी में सहायता करना था। यह निर्धारित किया गया था कि भविष्य के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में क्या प्राथमिकता दी जानी चाहिए और उन योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए किन विधियों और संसाधनों का उपयोग किया जाना चाहिए, यह निर्धारित करने में क्षेत्र-आधारित शिक्षकों की भागीदारी महत्वपूर्ण थी। भविष्य के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए विषयों की पहचान करने का प्राथमिक स्रोत प्रशिक्षकों के अपने सुझाव और विचार थे।[9]

हैरिस, बी.एम. (2020) इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में सेवाकालीन शिक्षा और प्रशिक्षण (इनसेट) के साथ और बिना प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों (टीजीटी) की प्रभावशीलता की तुलना की। टीजीटी की प्रभावशीलता पर जानकारी वास्तविक शिक्षण स्थितियों में उनके काम की अनुसूचित, व्यक्तिगत टिप्पणियों के माध्यम से एकत्रित की गई थी। इस शोध का उद्देश्य यह पता लगाना था कि सेवाकालीन प्रशिक्षण ने टीजीटी के कक्षा प्रबंधन, शिक्षाशास्त्र, एवी एकीकरण और मूल्यांकन कौशल में कितनी अच्छी तरह सुधार किया। 2005 और 2009 के बीच सेवाकालीन प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले इस्लामाबाद के सभी माध्यमिक विद्यालय टीजीटी को शोध में शामिल किया गया था।[10]

अंजनेयुलु, जी (2016) यह देखने के लिए पाकिस्तान में शोध किया कि क्या शिक्षक शिक्षा और छात्रों के प्रदर्शन के बीच कोई संबंध था। शोध के प्राथमिक लक्ष्य महिला शिक्षकों के प्रशिक्षण कौशल का आकलन करना, प्रशिक्षित महिला प्रशिक्षकों के परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करना और छात्र उपलब्धि के संदर्भ में शिक्षण की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करना था। स्तरीकृत

www.ignited.in

चयन पद्धति का उपयोग करते हुए, हमने अपने नमूने के रूप में 80 महिला शिक्षकों और 180 महिला दसवीं कक्षा का चयन किया। प्रश्नावली का उपयोग करके प्रत्येक समूह का व्यक्तिगत रूप से सर्वेक्षण किया गया था। इस डेटा को संकलित करने के लिए ग्रेड IX टेस्ट स्कोर और सर्वेक्षण का उपयोग किया गया था।[11]

गुप्ता, बी.एम. (2018) इस अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने के बाद अन्य भाषाओं (ईएफएल) के वक्ताओं को अंग्रेजी सिखाने की उनकी क्षमता में प्रशिक्षकों का आत्मविश्वास और प्रेरणा बढ़ गई। हालांकि, ईएफएल प्रशिक्षक अभी तक सबसे मौलिक स्तर पर अंग्रेजी भाषा के अपने छात्रों के आदेश को बढ़ाने में सफल नहीं हुए हैं। अधिकांश शिक्षकों ने अगले प्रशिक्षण सत्र में भाग लेने से पहले इसे अनिवार्य रूप से पहचान लिया है। शिक्षकों ने यह भी वकालत की कि प्रशिक्षण कार्यक्रम लंबा (दीर्घकालिक प्रशिक्षण) होना चाहिए, क्योंकि सबूत जमा हो गए हैं कि इस तरह के निर्देश शिक्षकों के रूप में उनके कौशल को विकसित करने के लिए एक मंच के रूप में मूल्यवान थे। इस सर्वेक्षण में शिक्षकों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को एक कारक के रूप में बताया कि वे अपने पेशे से कैसे संपर्क करते हैं।[12]

नारायण, एल. (2015) जिला-व्यापी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की सतत शिक्षा आवश्यकताओं पर एक शोध परियोजना पूरी की। (यह अध्ययन नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन एंड प्लानिंग के डिप्लोमा इन एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन आवश्यकता की आंशिक पूर्ति में प्रस्तुत किया गया था। अध्ययन का प्राथमिक लक्ष्य प्री-सर्विस और इन-सर्विस शिक्षक तैयारी में डाइट की आवश्यकता और व्यवहार्यता स्थापित करना था। इस अध्ययन का उद्देश्य नामित डाइट में सेवाकालीन प्रशिक्षण के विकास को उसकी स्थापना से ही प्रतिबिंबित करना है। उम्मीदों और वास्तविकता के बीच विसंगतियों का पता लगाना लक्ष्य है। विफलताओं के मूल कारणों का निर्धारण करें और शिक्षक शिक्षा को जारी रखने के लिए एक रणनीति तैयार करें। वर्तमान प्रणाली के भीतर।[13]

3. कार्यप्रणाली

अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा में एक स्थानीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के जागरूकता स्तर का आकलन करना है। कार्यक्रम में भाग लेने वाले शिक्षकों के बीच डेटा एकत्र करने और जागरूकता स्तर का विश्लेषण करने के लिए कार्यप्रणाली में एक व्यवस्थित दृष्टिकोण शामिल होगा।

वर्तमान शोध वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रकार का अध्ययन हैं।

नमूना

वर्तमान अध्ययन में राजस्थान के प्रशिक्षित स्कूल शिक्षकों की जनसंख्या थी तथा अनूपगढ़, जयपुर उत्तर एवं जोधपुर पश्चिम जिले के 600 प्रशिक्षित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का सोद्देश्य चयन किया गया था।

तालिका 3.1: तीन जिलों में नमूने का वितरण

जिलों का नाम	शहरी स्कूल	प्रति विद्यालय से 10 शिक्षक	ग्रामीण विद्यालय	प्रति विद्यालय से 10 शिक्षक	कुल विद्यालय	कुल विद्यालय
अनूपगढ़	5	100	5	100	10	200
जयपुर उत्तर	5	100	5	100	10	200
जोधपुर पश्चिम	5	100	5	100	10	200
कुल मिलाकर	शहरी और ग्रामीण विद्यालय 30			शहरी और ग्रामीण शिक्षक 600		

उपकरण

इस अध्ययन के लिए निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया गया

प्रश्नावली

राजस्थान में आईसीटी के संबंध में प्रशिक्षित शिक्षकों की जागरूकता पर डेटा संग्रह के लिए, शोधकर्ता ने स्व-निर्मित प्रश्नावली प्रपत्र का इस्तेमाल किया। इसमें कंप्यूटर, इंटरनेट, इलेक्ट्रॉनिक मेल (ई-मेल), वर्ल्ड वाइड वेब (डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू), ब्रॉडकास्टिंग टेक्नोलॉजी (रेडियो और टेलीविजन), संबद्ध मानव इंटरैक्टिव सामग्री के बारे में जानकारी और ज्ञान शामिल है जो माध्यमिक प्रशिक्षित शिक्षकों को उन्हें व्यापक श्रेणी के लिए नियोजित करने में सक्षम बनाता है। व्यक्तिगत उपयोग, समग्र आईसीटी के अलावा शिक्षण सीखने की प्रक्रिया। प्रश्नावली में कुल पचास प्रश्न अग्रणी थे और प्रत्येक प्रश्न एक अंक का था।

आईसीटी से संबंधित जागरूकता के स्तर की गणना करने के लिए पांच श्रेणियों का उपयोग किया गया था। प्रश्नावली के

www.ignited.in

प्राप्तांकों के आधार पर 1-10 बहुत खराब, 11-20 खराब, 21-30 औसत, 31-40 अच्छी और 41-50 बहुत अच्छी श्रेणी रही।

डेटा संग्रह की प्रक्रिया

प्रश्नावली प्रपत्र तैयार करने के बाद, शोधकर्ता ने राजस्थान के अनूपगढ़, जयपुर उत्तर और जोधपुर पश्चिम जैसे प्रत्येक तीन जिलों में तीस अलग-अलग माध्यमिक विद्यालयों में पांच शहरी और पांच ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया। दस माध्यमिक प्रशिक्षित शिक्षकों को प्रत्येक स्कूल से प्रश्नावली का प्रबंधन करने की अनुमति दी गई थी और प्रत्येक शिक्षक के लिए प्रश्नावली को व्यक्तिगत रूप से प्रशासित किया गया था। इस तरह कुल छह सौ प्रशिक्षित शिक्षकों ने प्रश्नावली के संचालन में भाग लिया।

सांख्यिकीय तकनीकें

आवश्यक सांख्यिकीय तकनीकों के अनुप्रयोग के माध्यम से एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन (एसडी) और "टी" परीक्षण।

4. परिणाम

अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा में एक स्थानीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के जागरूकता स्तर का आकलन करना हैं। अध्ययन के परिणाम कार्यक्रम में भाग लेने वाले शिक्षकों के बीच जागरूकता के स्तर में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

प्रशिक्षित शिक्षकों में आईसीटी जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना। परिणाम निम्न तालिका में दिखाया गया है।

तालिका 4.1: प्रशिक्षित शिक्षकों में आईसीटी जागरूकता का स्तर

क्र.सं.	आईसीटी जागरूकता का स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
1	बहुत गरीब	24	4
2	गरीब	324	54
3	औसत	205.98	34.33
4	अच्छा	12	2
5	बहुत अच्छा	33.96	5.66
कुल		600	100

तालिका 4.1 से पता चलता है कि 4% प्रशिक्षित शिक्षक बहुत गरीब हैं, 54% गरीब हैं, 34.33% औसत हैं, 2% अच्छे हैं और 5.66% आईसीटी जागरूकता का बहुत अच्छा स्तर रखते हैं। कुल मिलाकर प्रशिक्षित शिक्षकों में आईसीटी जागरूकता का स्तर खराब है।

पुरुष और महिला प्रशिक्षित शिक्षकों के बीच आईसीटी के बारे में जागरूकता का स्तर। परिणाम निम्न तालिका में दिखाया गया है।

तालिका 4.2: पुरुष और महिला प्रशिक्षित शिक्षकों में आईसीटी जागरूकता का स्तर

पुरुष प्रशिक्षित शिक्षक			महिला प्रशिक्षित शिक्षक			स्वतंत्रता की कोटियां (डीएफ)	टी-मान
एम1	एन1	एसडी 1	एम2	एन2	एसडी2	298	1.349
20.07	320	8.37	18.87	280	7.04		

तालिका 4.2 से पता चलता है कि "टी" का गणना मूल्य यानी 1.349 "टी" के महत्वपूर्ण तालिका मूल्य से छोटा है, जिसमें स्वतंत्रता की 298 डिग्री पांच प्रतिशत और एक प्रतिशत स्तर का महत्व क्रमशः 1.97 और 2.59 है। इसलिए, यह 5% और 1% के महत्व के स्तर तक महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए, पुरुष और महिला प्रशिक्षित शिक्षकों के बीच आईसीटी जागरूकता के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों के बीच आईसीटी जागरूकता का स्तर। परिणाम निम्न तालिका में दिखाया गया है।

तालिका 4.3: ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों में आईसीटी जागरूकता का स्तर

शहरी प्रशिक्षित शिक्षक			ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षक			आजादी की डिग्री (डीएफ)	टी-मान
एम1	एन1	एसडी 1	एम2	एन2	एसडी2	298	7.864
22.79	300	6.71	16.31	300	7.55		

www.ignited.in

तालिका 4.3 दर्शाती है कि आईसीटी जागरूकता के संबंध में शहरी प्रशिक्षित शिक्षकों का औसत मूल्य ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में अधिक है। पांच प्रतिशत और एक प्रतिशत के महत्व के स्तर पर 298 डिग्री स्वतंत्रता के साथ "टी" का महत्वपूर्ण तालिका मूल्य क्रमशः 1.97 और 2.59 है। "टी" का परिकलित मान 7.864 है जो महत्वपूर्ण तालिका मान से अधिक है। इसलिए, यह 5% और 1% दोनों स्तरों के महत्व के लिए महत्वपूर्ण है। अतः परिणाम दर्शाता है कि शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों के मध्य सार्थक अन्तर है। इस परिणाम से यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी प्रशिक्षित शिक्षक ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में कम जागरूक हैं। प्राप्त परिणाम काफी तार्किक है क्योंकि शहरी शिक्षकों को या तो औपचारिक रूप से या औपचारिक रूप से आईसीटी से संबंधित सुविधाएं नहीं मिलती हैं

प्रमुख निष्कर्ष

प्रशिक्षित शिक्षकों में 4% बहुत खराब, 54% गरीब, 34.33% औसत, 2% अच्छे और 5.66% आईसीटी जागरूकता का बहुत अच्छा स्तर था।

पुरुष और महिला प्रशिक्षित शिक्षकों के बीच आईसीटी जागरूकता के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था

शहरी और ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर था। ग्रामीण प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में शहरी प्रशिक्षित शिक्षक कम जागरूक थे।

शैक्षिक निहितार्थ

यह अध्ययन शिक्षकों के बीच आईसीटी आधारित जातीयता को लॉन्च करने में मददगार होगा।

यह विभिन्न विश्वविद्यालयों में एक समान आईसीटी आधारित पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए शैक्षिक योजनाकारों को संपूर्ण शैक्षिक प्रणाली में एक क्रांति शुरू करने के लिए प्रेरित करेगा

5. निष्कर्ष

शिक्षण के पारंपरिक तरीके कभी भी छात्रों के लिए महत्वपूर्ण सोच और समझ के लिए योजना प्रभावी आधार विकसित नहीं कर सके। सीखने के व्यक्तिगत होने पर वे अधिक सीख सकते थे और यह केवल कक्षा की स्थिति में सूचना संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करके ही संभव है। इसके माध्यम से शिक्षार्थी अपनी स्वयं की अवधारणा का निर्माण करने और अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान खोजने में सक्षम होंगे। यह तभी अधिक संभव होगा जब शिक्षकों को आईसीटी के बारे में पर्याप्त ज्ञान और जागरूकता होगी। आईसीटी की जागरूकता के लिए शिक्षकों को आईसीटी से जुड़े कौशल को विकसित करने के लिए उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। यह आशा की जाती है कि यदि शिक्षक पूर्ण रूप से जागरूक होंगे तो वे अपने शिक्षार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्गदर्शन करने में सक्षम होंगे।

6. संदर्भ

1. चौहान, डी.आर., शर्मा, बी., और रावत, जे. (2017)। जिले के सुन्नी शैक्षिक ब्लॉक में एसएसए के तहत सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम। शिमला, एक सूक्ष्म शोध अध्ययन। हिमाचल प्रदेश: एसएसए।
2. हेस, डी। (2017)। इनसेट, इनोवेशन एंड चेंज इन-सर्विस टीचर डेवलपमेंट: इंटरनेशनल पर्सपेक्टिव्स। लंदन: प्रेंटिस हॉल।
3. अग्रवाल, वी.पी., और कमलेसराव, जी. (2017)। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता: एक मूल्यांकन अध्ययन। एनसीईआरटी: नई दिल्ली।
4. जांगीरा, एन.के., और आहूजा, ए. (2020)। शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहकारी शिक्षण आधारित प्रशिक्षण (सीएलबीटी) की प्रभावशीलता (एनसीटीई बुलेटिन में उद्धृत)। 2(1), 4.
5. डेन्सो, एच., अडू, एम.के., और म्प्राह, आर.के. (2015)। घाना में एक सार्वजनिक विश्वविद्यालय के वरिष्ठ कर्मचारियों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण का मूल्यांकन। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 3(7), 96-104।
6. डे, सी। (2019)। विकासशील शिक्षक: जीवन भर सीखने की चुनौतियाँ। लंदन: फाल्मर प्रेस
7. बुटाला, एम। (2017)। गुजरात राज्य के माध्यमिक शिक्षक महाविद्यालयों द्वारा संचालित सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रमों की एक गंभीर जाँच। पीएच.डी. शिक्षा में थीसिस, गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात।
8. कपूर, बी.के. (2016)। दिल्ली के प्राइमरी स्कूल हेड मास्टर्स के लिए इन-सर्विस एजुकेशन, करिकुलम का विकास और सत्यापन। पीएच.डी.

थीसिस इन एजुकेशन, कोटा ओपन यूनिवर्सिटी, राजस्थान।

9. कंथाराज, एच.एम. (2018)। सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का रवैया। इंडियन स्ट्रीम रिसर्च जर्नल, 3(7), 22-25।
10. हैरिस, बी.एम. (2020)। सेवाकालीन शिक्षा के माध्यम से कर्मचारियों के प्रदर्शन में सुधार। बोस्टन: एलिन एंड बोकॉन इंक।
11. अंजनेयुलु, जी। (2016)। एपीपीईपी के छह सीखने के सिद्धांतों के कार्यान्वयन में शिक्षकों पर प्रशिक्षण के प्रभाव की जांच: शिक्षक शिक्षा में अभिनव प्रयोग और अभ्यास। नई दिल्लीः एनसीईआरटी।
12. गुप्ता, बी.एम. (2018)। बदलते परिवेश में शिक्षक शिक्षा नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
13. नारायण, एल। (2015)। प्राथमिक शिक्षकों के पेशेवर कौशल के विशेष संदर्भ में शिक्षक सशक्तिकरण पर सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्रभाव। नई दिल्लीः एनसीईआरटी

Corresponding Author

Ritu Chauhan*

Research Scholar, The Glocal University Saharanpur, UP